CRPF
कांस्टेबल

LATEST EDITION

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

ट्रेड्समैन & टेक्निकल

HANDWRITTEN NOTES

भाग -3 सामान्य हिंदी

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

CRPF

कांस्टेबल

ट्रेड्समैन & टेक्निकल

भाग –3

सामान्य हिंदी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**CRPF Constable (Tradesmen & Technical)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल (CRPF)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**CRPF Constable (Tradesmen & Technical)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp - https://wa.link/f3uxse

Online Order - https://bit.ly/3MicWlh

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

सामान्य हिन्दी		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	वर्णमाला	1
2.	उपसर्ग	4
3.	प्रत्यय	9
4.	संधि एवं संधि विच्छेद	17
5.	समास एवं समास विग्रह	33
6.	वाक्य	49
7.	व्याकरण कोटियाँ • कारक • लिंग • वचन	52
8.	संज्ञा	60
9.	सर्वनाम	65
10.	विशेषण	67
11.	क्रियाएं • क्रिया • काल • वाच्य	70
12.	अव्यय	76
13.	अनेकार्थी शब्द	82
14.	विलोम शब्द	84
15.	पर्यायवाची शब्द	101
16.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	114
17.	शब्द प्रकार • तत्सम	129

	• तद्भव • देशज • विदेशी शब्द	
18.	शब्द युग्म / श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	138
19.	वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द	150
20.	शब्द शुद्धि	166
21.	वाक्य शुद्धि	172

अध्याय – 1

वर्णमाला

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. **मौखिक या उच्चारित भाषा-** मौखिक भाषा की सूक्ष्मतम इकाई ध्वनि होती है। वास्तव में ध्वनि का संबंध सुनने व बोलने से है। यह भाषा उच्चारण पर आधारित होती है। उच्चारण करने के लिए मानव के जो मुख्य-अवयव काम करते हैं वह उच्चारण अवयव कहलाते हैं।

2. **लिखित भाषा-** लिखित भाषा की सूक्ष्मतम इकाई वर्ण होती है। वर्ण का संबंध लिखने व देखने से है। वर्ण ध्वनि रूपी आत्मा का शरीर है।
लिखित रूप से भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हो वर्ण कहलाते हैं।
जैसे एक शब्द है - नीला।
नीला शब्द के यदि टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- नी + ला
अब यदि नी और ला के भी टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- न् + ई तथा ल् + आ।
अब यदि न ई, ल् आ के भी हम टुकडे करना चाहे तो यह संभव नहीं है। अतः ये वर्ण कहलाते हैं।
ये वर्ण दो ही प्रकार के होते हैं- स्वर तथा व्यंजन
वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अतः वर्ण ही भाषा का मूल आधार है।
हिंदी में वर्णों की संख्या 44 है।
वर्णों को दो भागों में बांटा जाता है

1. **स्वर** 2. **व्यंजन**

1. **स्वर** - स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती है, अर्थात वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते हैं।
स्वरों की संख्या 11 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
मात्राओं की संख्या 10 - क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।

2. **व्यंजन** - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती है।
व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

विशेष

1. हिंदी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
2. हिंदी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।

स्वरों का वर्गीकरण पाँच भागों में बांटा जाता है।

1. उच्चारण अवधि के आधार पर-

1. **लघु स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, इ, उ, ऋ
   इन्हें मूल स्वर और ह्रस्व स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है अर्थात दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
   इन्हें संधि स्वर भी कहते हैं।

3. ओष्ठाकृति के आधार पर -

1. **वृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- उ, ऊ, ओ, औ
2. **अवृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत के समान गोल न होकर फैले रहते हैं। अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

3. जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर:-

1. **अग्र स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशीलता रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं। जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ
2. **मध्य स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं। जैसे- 'अ'

3. **पश्च स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला (पश्च) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं। जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. **मुखाकृति के आधार पर -**

1. **संवृत स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संवृत स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ

2. **अर्द्ध संवृत स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं। जैसे- ए, ओ
3. **विवृत्त स्वर**- विवृत का अर्थ होता है 'खुला हुआ', वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य पूरा खुला रहता है अर्थात सबसे ज्यादा खुला रहता है विवृत स्वर कहलाते हैं। जैसे- 'आ'
4. **अर्द्ध विवृत्त** - वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, ऐ, औ

5. **नासिका के आधार पर-**

1. **निरनुनासिका स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती हैं।

   जैसे- सभी स्वर

2. **अनुनासिक स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिक का प्रयोग किया जाता है, अर्थात मुख के साथ-साथ नासिक से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक। सानुनासिक कहलाती हैं। जैसे- अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ऐं, ओं, औं

व्यंजनों का वर्गीकरण

1. **उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-**
   ध्वनियों के उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है। यह प्रयत्न तीन प्रकार से होते हैं-

1. **स्वरतंत्री में कंपन्न**- स्वरतंत्रियो में होने वाली कंपन्न, नांद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं - सघोष और अघोष

   अघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन नहीं रहता है वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती हैं। वर्गीय व्यंजनों के पहले व दूसरे व्यंजन अघोष होते हैं। (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा ष, श, स)।

   सघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन रहता है वे सघोष ध्वनियां कहलाती है।
   वर्गीय व्यंजनों का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन 'सघोष होता है।
   (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड़, ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म) अन्तः स्थ (य, र, ल, व) तथा ह । सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा**- उच्चारण में वायु प्रक्षेप या श्वास वायु की मात्रा की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं-

1. **अल्पप्राण** 2. **महाप्राण**

1. **अल्पप्राण**- जिनके उच्चारण में श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती, उन्हें अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण व्यंजन हैं।

   जैसे- क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म।
   अन्तस्थ (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण ही हैं।

2. **महाप्राण**- महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।

   जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, थ, ध, फ, भ और ष, श, स, ह।

3. **मुख अवयवों द्वारा श्वास को रोकने के रूप में-**

   ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीव या अन्य मुख्य अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं इस आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित विभाजन किया जाता है।
   स्पर्शी व्यंजन- ये कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्ष से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।
   उदाहरणार्थ-
   क वर्ग -क, ख, ग, घ, ङ (कंठ से)
   च वर्ग -च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)

ट वर्ग - ट, ठ, ड़, ढ़, ण (मूर्धा से)
त वर्ग - त, थ, द, ध, न (दन्त से)
प वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

नासिक्य- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं परंतु वायु पूरी तरह मुख से न निकल कर नाक से भी निकलती है उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं। ड़, ञ, ण, न, म नासिक के व्यंजन है

स्पर्श संघर्षी - जिन व्यंजन के उच्चारण में वायु पहले किसी मुख-अवयव से स्पर्श करती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है उन्हें स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
च, छ, ज, झ स्पर्श संघर्शी व्यंजन है।

संघर्षी - जिन व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा वायु से होता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। यह चार है - ष, श, स, ह । इन्हें ही संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं।

उत्क्षिप्त- उत्क्षिप्त शब्द का अर्थ है उछाला हुआ या फेंका हुआ। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्ष करके झटके से वापस आता है उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन है।

अतःस्थ - स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण य, र, ल, व को अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। अंतस्थ व्यंजनों का विभाजन निम्न है-

पार्श्विक - पार्श्विक का अर्थ है-बगल का। जिस ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा श्वास वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है और वायु उसके अगल-बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

प्रकंपित - प्रकंपित का अर्थ है कांपता हुआ। जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा की नोक वायु से रगड़ खाकर कांपती रहती है उसे प्रकंपित व्यंजन कहते हैं। 'र' प्रकंपित व्यंजन है।

लुण्ठित - 'र' को लुण्ठित व्यंजन कहते हैं क्योंकि 'र' के उच्चारण में जिह्वा लुढ़ककर स्पर्ष करती है।

अर्द्ध स्वर - हिंदी में य, व ऐसी ध्वनियाँ है जो न तो पूर्ण रूप से स्वर है, ना पूर्णरूपेण व्यंजन है। इनके उच्चारण में श्वास वायु को रोकने के लिए उच्चारण अवयव प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन वह प्रयत्न न के बराबर होता है। अतः यह ध्वनियाँ लगभग अवरोध रहित निकल जाती है।

संयुक्त व्यंजन - हिंदी वर्णमाला में कुल 4 संयुक्त व्यंजन है।
क्ष (क्+ष) त्र (त्+र) ज्ञ (ज्+ञ)
श्र का संधि विच्छेद (श+र)

2. प्रयत्न स्थान के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

1. कंठ्य व्यंजन - क्, ख्, ग्, घ्, ङ, ह्
कठ्य व्यंजन तथा इनका उच्चारण स्थान कंठ है। ह और विसर्ग कंठ के थोड़ा नीचे काकल से बोली जाती है, इसलिए इन्हें काकल्य ध्वनि कहा जाता है।

2. तालव्य व्यंजन - च्, छ्, ज्, झ्, ञ, स्
ष् तालव्य व्यंजन है, इनका उच्चारण तालु के माध्यम से होता है। इनके उच्चारण में जीभ का अगला भाग ऊपर उठकर दांतों के मसूड़ों से ऊपर तालु को स्पर्ष करता है।

3. मूर्धन्य व्यंजन - ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ड़, ढ़, ऱ्
मूर्धन्य व्यंजन है तथा इनका उच्चारण जीभ के अग्रभाग द्वारा मूर्धा (तालु का बीच उपर वाला ऊपर का कठोर भाग) को स्पर्ष करने से होता है।

4. दंत्य व्यंजन - त्, थ्, द्, ध् दंत्य व्यंजन है जो जीभ की ऊपर की नोक द्वारा ऊपर के दांतो को स्पर्श करने से उच्चारित होते हैं।

5. **वत्स्र्य व्यंजन** - न्, न्ह, ल्, स्, ज व्यंजन वत्स्र्य है। वत्स्र्य का अर्थ है मसूड़ा अतः ऊपर के दांतो से थोड़ा ऊपर मसूड़ों के साथ जीभ के स्पर्श से यह व्यंजन बोले जाते हैं। पारंपरिक रूप से न् एवं स् को दंत्य कहा जाता है, किंतु इनका वास्तविक उच्चारण स्थान दांतो से ऊपर है इसलिए इन्हें वत्स्र्य में सम्मिलित किया गया है।

6. ओष्ठ्य व्यंजन - प्, फ, ब्, भ् म्, व्, म्ह
दोनों ओठों को मिलाने पर बोले जाते हैं इसलिए इन्हें ओष्ठ्य कहा जाता है।

7. **दंतोष्ठ्य** - फ, व व्यंजन ऊपर के दांत एवं नीचे के होंठ को मिलाने से उच्चारित होते हैं। इसलिए इन्हें दंतोष्ठ्य व्यंजन कहा जाता है।

3. **अन (बिना)** – अनखाया, अनपढ़, अनबन, अनबूझा, अनमेल, अनमोल, अनसुना, अनहित, अनहोनी ।
4. **अंतर् (भीतर / मध्य)** – अंतरात्मा, अन्तरिक्ष, अंतर्गत, अंतर्ज्ञान, अन्तर्दशा, अंतर्ध्यान, अंतर्निहित, अंतर्मन, अन्तर्यामी, अंतर्राष्ट्रीय ।
5. **का(नीच / बुरा)** – काजल, कातर (अधीर), कापथ (कुमार्ग), कापुरुष ।
6. **कु (बुरा)** – कुकर्म, कुफल, कुपात्र, कुपुत्र, कुतर्क, कुमति , कुरंग(हरिण) , कुरूप ।
7. **चिर (देर का, अधिक, दीर्घ)** – चिरंजीवी, चिरकाल, चिरजीवी, चिरनवीन, चिरपरिचित, चिरस्थायी, चिरायु।
8. **पर (दूसरा)** – पराधीन (परा+अधि+इन), परोपकार (पर+उप+कार)।
9. **सह (साथ)** – सहकर्मी, सहगान, सहचर, सहचिन्तन, सहज, सहयोग।

अध्याय – 3

प्रत्यय

परिभाषा:-

वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत मे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हे प्रत्यय कहते है। शब्दों में प्रत्यय लगाकर उसी शब्द से विभिन्न अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं, जिनका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता। वे जिस शब्द के साथ जुड़ते हैं, उसके अर्थ को प्रभावित करते है।

प्रत्यय में संधि नियम लागू नहीं होता है।

हिन्दी में प्रत्यय दो प्रकार के होते है-

1. **तद्धित प्रत्यय**
2. **कृत / कृदंत प्रत्यय**

1. **तद्धित प्रत्यय** – जो प्रत्यय क्रिया के धातु – रूपों को छोड़कर अन्य शब्दों जैसे – संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम आदि के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हे तद्धित प्रत्यय कहते हैं तथा इनसे बने शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं ।

जैसे – बंगाल + ई = बंगाली

यहाँ 'ई' तद्धित प्रत्यय है क्योंकि यह बंगाल नामक संज्ञा के साथ मिलकर नया शब्द 'बंगाली' बना रहा है।

तद्धित प्रत्यय 6 प्रकार के होते है।

1. कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय
2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय
3. संबंध वाचक तद्धित प्रत्यय
4. अप्रत्यय वाचक/संतान बोधक तद्धित प्रत्यय
5. ऊनतावचक / हीनता / लघुता वाचक तद्धित प्रत्यय
6. स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय

1) **कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय** – वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द के अंत मे जुड़कर कर्तावाचक शब्द का निर्माण करते है, कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

प्रत्यय	मूल शब्द	तद्धितान्त
आरी	पूजा भीख	पुजारी भिखारी
एरा	घास बास ठाठ	घसेरा बसेरा ठठेरा

आरा	बनिज हत्या	बंजारा हत्यारा
आर	लोहा सोना चाम गाँव	लुहार सुनार चमार गंवार
इया	रस दुःख छल	रसिया दुखिया छलिया
ई	भेद तेल	भेदी तेली
ची	नकल खजाना तोप	नकलची खजानची तोपची
दानी	पीक मच्छर	पीकदानी मच्छरदानी
दान	खान पीक	खानदान पीकदान
वान/बान	कोच गुण मेज धन	कोचवान गुणवान मेजबान धनवान
कार	संगीत पेश	संगीतकार पेशकार
वाला	काम फल दूध	कामवाला फलवाला दूधवाला
एडी	नशा गाँजा	नशेड़ी गंजेड़ी
ऊ	पेट नाक	पेटू नक्कू
हारा	लकड़ पानी	लकड़हारा पनिहारा
हेत	दंगा बरछा	दंगैत बरछैत

2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय – वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत मे जुड़कर भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं, भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं ।

प्रत्यय	मूल शब्द	तद्धितान्त
आई	बुरा साफ ठाकुर पंडित	बुराई सफाई ठकुराई पंडिताई
आन	नीचा लंबा घमास	नीचान लंबान घमासान
आ	सर्राफ जोड़	सर्राफा जोड़ा
ई	दलाल सर्द किसान महाजन गृहस्थ चोर	दलाली सर्दी किसानी महाजनी गृहस्थी चोरी
इकी	मानव संस्था	मानविकी संस्थिकी
अक	बंध चिकित्सा लच ठंड	बंधक चिकित्सक लचक ठंडक
आवा	चढ़ा बुला दिखा छल	चढ़ावा बुलावा दिखावा छलावा
गी	हकबार जिंदा सादा मर्दानि	हकबारगी जिंदगी सादगी मर्दानगी
ता	सुंदर मित्र लघु	सुंदरता मित्रता लघुता
त	रंग चाह	रंगत चाहत
नी	नथ चाँद	नथनी चाँदनी
पन	बाल भोला बांझ छोटा	बालपन भोलापन बांझपन छुटपन
कार	झन जय	झंकार जयकार

व्यवसाय	व्यावसायिक
व्यवहार	व्यावहारिक
संप्रदाय	सांप्रदायिक
सत्त्व	सात्त्विक
समुदाय	सामुदायिक
समूह	सामूहिक
सर्वत्र	सार्वत्रिक
सर्वभूमि	सार्वभौमिक
सर्वलोक	सार्वलौकिक

(दो जगह वृद्धि सर्व – सार्व (लौ-लौ)

हृद्	हार्दिक

(ह - हा, ऋ - र्)

इ – ऐ

इंद्रिय	ऐंद्रिक
इच्छा	ऐच्छिक
इतिहास	ऐतिहासिक
त्रिमास	त्रैमासिक
दिन	दैनिक
निष्ठा	नैष्ठिक
विकल्प	वैकल्पिक
विचार	वैचारिक
विज्ञान	वैज्ञानिक
विवाह	वैवाहिक

ई – ऐ

नीति	नैतिक
जीव	जैविक

ए – ऐ

एक	ऐकिक
देव	दैविक
वेतन	वैतनिक
वेद	वैदिक
सेना	सैनिक

उ – औ

उद्योग	औद्योगिक
उपचार	औपचारिक
उपनिवेश	औपनिवेशिक
उपनिषद्	औपनिषादिक
उपन्यास	औपन्यासिक
पुराण	पौराणिक
पुष्ट	पौष्टिक
बुद्धि	बौद्धिक

मुख	मौखिक
मुद्रा	मौद्रिक

ऊ-औ

भूगोल	भौगोलिक
भूत	भौतिक
भूमि	भौमिक
मूल	मौलिक

ओ-औ

योग	यौगिक
लोक	लौकिक

अ – अ – आ

अंत का उ – व् में बदल जाता है तथा अ प्रत्यय लगने पर यह पूरा व बन जाता है।

दनु	दानव

उ – व् + अ = व

मधु	माधव
मनु	मानव
यदु	यादव
रघु	राघव
लघु	लाघव

अ – आ

पांडु – पांडव

अंत का उ – व्

इ – ऐ

जिन – जैन

विष्णु – वैष्णव

शिव – शैव

सिंधु – सैंधव

उ – औ

(शब्द का प्रथम स्वर उ – औ में बदलता है तथा अंत का उ – व् में बदलता है।)

कुरु – कौरव

कु – कौ

कुशल – कौशल

गुरु – गौरव

दुहित्र – दौहित्र

पृथा – पार्थ

मुनि – मौन

शुचि – शौच

इ

दशरथ

पणिन – पाणिनी

मरुत् – मारुति
वल्मीक – वाल्मीकी
सरथ – सारथी

ई – अ – आ

जनक – जानकी
पर्वत – पार्वती
विदेह – वैदेही

एय – प्रत्यय

अग्नि – आग्नेय
अतिथि – आतिथेय
अत्रि – आत्रेय
उपमा – उपमेय
कुंती – कौंतेय
कृतिका – कार्तिकेय
गंगा – गांगेय
पथ – पाथेय
पुरुष – पौरुषेय

अयन प्रत्यय

राम – रामायण
नारा – नारायण

आयन प्रत्यय

कात्य – कात्यायन
दाँड्य – दाँड्यायन
वात्स्य – वात्स्यायन

भाववाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय :-

'य' प्रत्यय से भाववाचक संज्ञा बनती है, तो विकल्प से ताप प्रत्यय से भी भाववाचक संज्ञा बनती है; इसलिए 'य' प्रत्यय लगने पर 'ता' प्रत्यय लगाना अनावश्यक एवं अशुद्ध होता है।

'य' प्रत्यय

अदिति - आदित्य
अभिजात - अभिजात्य
उदार -औदार्य
कवि - काव्य
तरुण - तारुण्य
दंपती - दांपत्य
पश्चात् - पाश्चात्य
मधुर - माधुर्य
मलिन - मालिन्य
महात्मा - माहात्म्य
ललित - लालित्य
लवण - लावण्य
वत्स - वात्स्य
वत्सल - वात्सल्य
सदृश्य - सादृश्य
सन्निधि - सान्निध्य
सम - साम्य
समान - सामान्य
स्वतंत्र - स्वातंत्र्य
स्वस्थ- स्वास्थ्य

आ – आ

प्राची – प्राच्य

इ – ऐ

अतिथि – आतिथ्य
दिति – दैत्य
निकट – नैकट्य
निपुण – नैपुण्य
निरंतर – नैरंतर्य
विधवा – वैधव्य
विराग – वैराग्य

ई – ऐ

ईश्वर – ऐश्वर्य
दीन – दैन्य
धीर – धैर्य

उ – औ

उचित – औचित्य
उत्सुक – औत्सुक्य
उदार – औदार्य
सुंदर – सौन्दर्य
सुजन – सौजन्य
सुभाग – सौभाग्य

ऊ – औ

दूत – दौत्य
शूर – शौर्य
सूम – सौम्य
पृथक – पार्थक्य

ए – ऐ

एक – ऐक्य

अध्याय – 5

समास एवं समास – विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते है।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे:-

गंगाजल गंगाजल - गंगा का जल

गंगा जल गंगा जल

(पूर्वपद) (उत्तरपद) (समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही

समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते है

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में,पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और दिगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:- भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(1) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत,

समस्त पद		**विग्रह**
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप में / जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में / (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो। प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे
जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह
मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे – छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला / वाली
खुला – खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरु – शुरु	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग
अहेतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते - देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
ड़रा – ड़रा	-	बहुत ड़रा
तरह- तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल

घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
अकारण	-	बिना कारण के
घड़ी-घड़ी	-	हर घड़ी
पहले-पहले	-	सबसे पहले
भरसक	-	पूरी शक्ति से
बखूबी	-	खूबी के साथ
निः सन्देह	-	सन्देह के बिना
बेअसर	-	असर के बिना
सादर	-	आदर के साथ
बेकाम	-	बिना काम के
अनजान	-	बिना जाने
प्रत्यक्ष	-	आँख के सामने
बेफायदा	-	फायदे के बिना
बाकायदा	-	कायदे के अनुसार
बेखटके	-	बिना खटके के
निड़र	-	ड़र के बिना
यथाशीघ्र	-	जितना शीध्र हो
प्रतिध्वनि	-	ध्वनि की ध्वनि

(2) <u>तत्पुरुष समास Determinative compound</u>

जिस समास मे बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है एवं पूर्व पद गौण होता है तथा दोनों पदो वे बीच का कारक- चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है। तत्पुरुष समास छः प्रकार के होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

[I] कर्मतत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में कर्मकारक की विभक्ति 'को' लुप्त हो जाती है, वहाँ कर्मतत्पुरुष समास है। जैसे –

समस्त पद		**विग्रह**
गगनचुम्बी	-	गगन को चूमने वाला
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त
चिड़ीमार	-	चिड़ियों को मारने वाला
ग्रामगत	-	ग्राम को गया हुआ
रथचालक	-	रथ को चलाने वाला
जेबकतरा	-	जेब को काटने वाला
जनप्रिया	-	जन को प्रिय
स्वर्गीय	-	स्वर्ग को गया
वनगमन	-	वन को गमन
सर्वप्रिय	-	सब को प्रिय
गिरहकट	-	गिरह को काटने वाला गिरह / गांठ
अतिथ्यर्पण	-	अतिथि को अर्पण
गृहागत	-	घर को गया हुआ
मरणासन्न	-	मरण को पहुंचा हुआ
परलोकगमन	-	परलोक को गमन
स्वर्गगत	-	स्वर्ग को गत (गया हुआ)
शरणागत	-	शरण को आगत
भयप्राप्त	-	भय को प्राप्त
स्वर्ग प्राप्त	-	स्वर्ग को प्राप्त
आशातीत	-	आशा को अतीत
मनपसन्द	-	मन को पसन्द
रूपधारी	-	रूप को धारण करने वाला
वर दिखाई	-	वर को दिखाना
मर्म भेदी	-	दिल को भेदने वाला
कार्यकर्ता	-	कार्य को करने वाला
रात जगा	-	रात को जगा हुआ
कठफोड़वा	-	काठ (लकड़ी)को फोड़ने वाला
देशगत	-	देश को गत (गया हुआ)
पाकिटमार	-	पाकिट को मारने (काटने) वाला
विरोधजनक	-	विरोध को जन्म देने वाला
दिल तोड़	-	दिल को तोड़ने वाला
आपत्तिजनक	-	आपति को जन्म देने वाला
हस्तगत	-	हस्त को गया हुआ
प्राप्तोदक	-	उदक (जल) को प्राप्त तक
तिलकुटा	-	तिल को कूटकर बनाया हुआ
जगसुहाता	-	जग को सुहाने वाला
संकटापन्न	-	संकट को प्राप्त आपन्न
विदेशगमन	-	विदेश को गमन सर्वज्ञ
नरभक्षी	-	नरों को भक्षित करने वाला
स्याहीचूस	-	स्याही को चूसने वाला
कनकटा	-	कान को कटवाने वाला
विद्युत मापी	-	विद्युत को मापने वाला
कृष्णार्पण	-	कृष्ण को अर्पण

[II] <u>करण तत्पुरुष समास (तृतीय तत्पुरुष):-</u>

जिस तत्पुरुष समास मे करणकारक की विभक्ति 'से',

रेलगाड़ी	-	रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
दहीबड़ा	-	दही में डूबा हुआ बड़ा
वनमानुष	-	वन मे निवास करने वाला मानुष
गुरुभाई	-	गुरु के सम्बन्ध मे भाई
मधुमक्खी	-	मधु का संचय करने वाली मक्खी
मालगाड़ी	-	माल ले जाने वाली गाडी
बैलगाड़ी	-	बैलों से खींची जाने वाली गाडी
पर्ण शाला	-	पर्णों से बनी शाला
मृत्युदंड़	-	मृत्यु के लिए दिए जाने वाला दंड़
पर्णकुटी	-	पर्णों से बनी कुटी
धृतअन्न	-	धृत से युक्त अन्न

कर्मधारय समास के अन्य उदाहरण:-

समस्त पद		विग्रह
रक्तलोचन	-	रक्त (लाल) है जो लोचन (आँख)
महासागर	-	महान है जो सागर
चरमसीमा	-	चरम तक पहुँची है जो सीमा
कुमारगंधर्व	-	कुमार है जो गन्धर्व
प्रभुदयाल	-	दयालु है जो प्रभु
परमाण	-	परम है जो अण
हताश	-	हत है जिसकी आशा
गतांक	-	गत है जो अंक
सद्धर्म	-	सत् है जो धर्म
महर्षि	-	महान है जो ऋषि
चूड़ामणि	-	चूड़ा (सर) में पहनी जाती है जो मणि
प्राणप्रिय	-	प्रिय है जो प्राण की
नवयुवक	-	नव है जो युवक
सदाशय	-	सत् है जिसका आशय
परकटा	-	कटे हुए है पर जिसके
कमतोल	-	कम तोलता है जो वह
बहुसंख्यक	-	बहुत है संख्या जिनकी
सत् बुद्दि	-	सत् है जो बुद्धि
अल्पाहार	-	अल्प है जो आहार
मंदबुद्धि	-	मंद है जिसकी बुद्धि
कुमति	-	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	-	कुत्सित है जो पुत्र
दुष्कर्म	-	दूषित है जो कर्म
कृष्ण- पक्ष	-	कृष्ण (काला) है जो पक्ष
राजर्षि	-	जो राजा भी है ओंर ऋषि भी
नरसिंह	-	जो नर भी है ओंर सिंह भी
चरणारविन्द	-	चरणरूपी अरविन्द (कमल)/ऐसा चरण जो कमल के समान हो
पदारविन्द	-	ऐसा पद जो अरविन्द के (कमल के) समान हो
कनकलता	-	कनक की सी लता
आशालता	-	आशारूपी लता
कापुरुष	-	कायर पुरुष
कुसुमकोमल	-	कुसुम के समान कोमल
कपोतग्रीवा	-	कपोत (कबूतर)के समान ग्रीवा (गर्दन)
चन्द्रबदन	-	चन्द्रमा के समान बदन
तिलपापड़ी	-	तिल से बनी पापड़ी
परमेश्वर	-	परम है जो ईश्वर
लौहपुरुष	-	लौह के समान पुरुष
भवसागर	-	भव रूपी सागर
समभावी	-	समान भावना रखने वाला
सुषुम- सेतु	-	सुषुम्ना नाड़ी रूपी सेतु
अर्द्धरात्रि	-	आधी है जो रात
संकट सागर	-	संकट रूपी सागर
हँसमुख	-	हँसता हुआ है जो मुख
ध्याननिद्रा	-	ध्यान रूपी निद्रा
सर्वश्रेष्ठ	-	सभी में श्रेष्ठ है जो
सूखा -भूसा	-	सूखा है जो भूसा
आहत-सम्मान	-	आहत हुआ हो जो सम्मान
मूक - भाषा	-	मूक है जो भाषा
निम्न श्रेणी	-	निम्न है श्रेणी
खुफिया विभाग	-	खुफिया विभाग है जो
सर्वोच्च	-	सबसे ऊंचा
भद्र पुरुष	-	भद्र है जो पुरुष
पूर्ण सुरक्षा	-	पूरी हो जो सुरक्षा
विशिष्टजन	-	विशिष्ट है जो जन
सामान्यजन	-	सामान्य है जो जन
परमार्थ	-	परम है जो अर्थ
कमजोर	-	कम है जोर जिसमें
प्रधानमन्त्री	-	प्रधान है जो मन्त्री

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

सादा दिल	-	सादा है जो दिल
महाराष्ट्र	-	महान है जो राष्ट्र
पाषाण हृदय	-	पाषाण है जो हृदय
नीलगाय	-	नीली है जो गाय
महादेवी	-	महान है जो देवी
गुरुदेव	-	देव के समान गुरु
महाशय	-	महान है जो (शय) व्यक्ति
सर्वव्यापक	-	सब जगह व्याप्त है जो
स्नेह रस	-	स्नेह से भरा रस
स्नेह दाता	-	स्नेह देता है जो
भलेमानस	-	भला है जो मानस
स्वयं सेवक	-	स्वयं सेवा करता है जो
मोमबत्ती	-	मोम से बनी है बत्ती
गोलघर	-	गोल है जो घर
स्वगतोक्ति	-	स्वगत है जो उक्ति
कीचड़ पानी	-	कीचड़ से युक्त पानी
कम उम्र	-	कम है जो उम्र
आजाद ख्याल	-	स्वतन्त्र है जो ख्याल

(4) <u>द्विगु समास (Numeral compound):-</u>

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद संख्यावाची शब्द होता है, वहीं द्विगु समास होता है।

- अर्थ की दृष्टि से द्विगु समास से किसी समूह या समाहार का बोध होता है अर्थात् यह समास समूहवाची या समाहारवाची होता है।

समस्त पद	-	**विग्रह**
सप्तसिन्धु	-	सात सिन्धुओं का समूह
दोपहर	-	दो पहरों का समूह
त्रिलोक	-	तीनों लोकों का समाहार / तीन लोक
चौराहा	-	चार राहों का समूह/ चार राहों का समाहार
नवरात्र	-	नौ रात्रियों का समूह
सप्तऋषि / सप्तर्षि	-	सात ऋषियों का समूह
पंचमढी	-	पाँच मढ़ियों का समूह
सप्ताह	-	सात दिनों का समूह
त्रिकोण	-	तीन कोणों का समाहार
तिरंगा	-	तीन रंगों का समूह
अठन्नी	-	आठ आनों का समाहार
चवन्नी	-	चार आने का समाहार
चौपाया	-	चार पांव वाला
चौमासा	-	चौ (चार) मासों का समूह
नवरत्न	-	(नव + रत्न) नौ रत्नों का समूह
षट्कोण	-	छः कोणों का समूह
सतरंगी	-	सात रंगो का समूह
चारपाई	-	चार पायों का समूह
तिमंजिल	-	तीन मंजिलों का समूह
तितल्ले	-	तीनों तल्लों का समूह
पंचतंत्र	-	पाँच तन्त्रों का समूह
त्रिवेणी	-	तीनों वेणियों का समूह
चतुष्पद	-	चार पादों का समूह
नवग्रह	-	नौ ग्रहों का समूह
चतुर्दिक	-	चार दिशाओ का समूह
त्रिफला	-	तीन फलों का समूह
त्रिभुवन	-	तीन भवनों का समूह

<u>नोट</u>- प्रायः द्विगु समास के समस्त पद एकवचन की तरह प्रयोग में लाये जाते हैं। जैसे:-

1. षट् रस का आनन्द लेना (शुद्ध) - षट् रसों का आनन्द लेना (अशुद्ध)
2. मैंने पंचतन्त्र (ग्रन्थ) पढा (शुद्ध) - मैंने पंचतन्त्र पढे। (अशुद्ध)
3. शताब्दी (न कि सौ वर्ष)
4. त्रिकोण (तीन कोण वाला एक आकार, न कि तीन कोण)
5. शतदल (सौ या अधिक दलों वाला कमल पुष्प, न कि सौ दल)

आदि शब्द एकवचन संज्ञा के रूप में प्रयोग में आते हैं।

<u>कर्मधारय समास और द्विगु समास में अन्तरः-</u>

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है, जो दूसरे पद की गिनती बताता है, जबकि, कर्मधारय समास का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नही होता है। <u>जैसे:-</u> नवरत्न - नौ रत्नों का समूह (द्विगु समास)

कर्मवाच्य में कर्म की अतः कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाते समय पुनः कर्ता के अनुसार क्रिया प्रयुक्त कर देंगे । जैसे :-

1.	उसके द्वारा पत्र लिखा जाएगा ।	वह पत्र लिखेगा ।
2.	बच्चों द्वारा चित्र बनाए गए ।	बच्चों ने चित्र बनाए ।
3.	गधे द्वारा बोझा ढोया गया ।	गधे ने बोझा ढोया ।

अध्याय – 12

अव्यय (अविकारी शब्द)

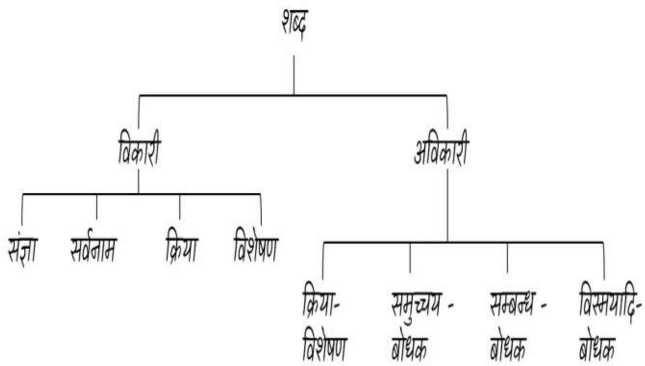

अविकारी या अव्यय शब्द

परिभाषा- "न व्ययेति इति अव्ययम्" के अनुसार अविकारी या अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जिन शब्दों का रूप (लिंग, वचन, क्रिया, विभक्ति में) परिवर्तन नहीं होता अर्थात इन शब्दों पर काल, वचन, लिंग, पुरुष आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त होते हैं, वहाँ एक ही रूप में रहते हैं। ये शब्द अव्ययीभाव समास के उदाहरण कहलाते हैं। जैसे- अन्दर बाहर, अनुसार, अधीन, इसलिए, यद्यपि, तथापि, परन्तु आदि। इनके अतिरिक्त अनेक उदाहरण हैं, दिए गए शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं किया जा सकता जैसे अन्दर का अन्दरी, अन्दरे, अन्दरा रूप नहीं बन सकता। अतः अव्यय या अवकिारी शब्द हैं। अविकारी शब्दों को सुविधा, स्वरूप और व्यवस्था की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है।

1. क्रिया-विशेषण

जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण अविकारी शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. वह प्रतिदिन पढ़ता है

2. कुछ खा लो।

3. मोहन सुन्दर लिखता है।

4. घोड़ा तेज दौड़ता है।

इन उदाहरणों में प्रतिदिन कुछ सुन्दर, तेज शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहें हैं। अतः में शब्द क्रियाविशेषण हैं। क्रिया-विशेषण के चार मुख्य भेद हैं-

(i) कालवाचक (ii) स्थानवाचक

(iii) परिमाणवाचक (iv) रीतिवाचक

कालवाचक- जो क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. सीता कल आएगी।

2. तुम अब जा सकते हो।

3. दिन भर पानी बरसता रहा।

4. तुम प्रतिदिन समय पर आते हो।

वाक्यों में कल, अब, दिनभर, दिन-प्रतिदिन शब्द क्रिया की विशेषता बतला रहे हैं अतः काल वाचक क्रिया-विशेषण हैं।

स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराएँ उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. वह पेड़ के नीचे बैठा है।

2. तुम आगे चलो।

3. हमारे आस-पास रहना।

4. इधर-उधर मत भागो।

इन वाक्यों में आगे, आस-पास, नीचे, इधर-उधर, स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द हैं।

परिमाण वाचक- जिन क्रिया-विशेषण शब्दों से क्रिया की अधिकता-न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे अर्थात नाप-तोल बतलाते हैं, वे परिमाण वाचक क्रियाविशेषण शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. उतना खाओं, जितना आवश्यक हो।

2. कुछ तेज चलो।

3. रमेश बहुत बोलता है।

4. तुम खूब खेलो।

आदि उदाहरणों में उतना, जितना, कुछ, बहुत, खूब आदि परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण अव्यय है।

रीतिवाचक- जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चले उन शब्दों को रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते है-रीतिवाचक विशेषण निम्न अर्थों में आते हैं-

प्रकारात्मक- धीरे-धीरे अचानक, अनायास, संयोग से, एकाएक, सहसा, सुखपूर्वक शान्ति से, हँसता हुआ, मन से, धड़ाधड़ झटपट, आप ही आप, शीघ्रता से, ध्यानपूर्वक, जल्दी, तुरन्त आदि।

निश्चयात्मक- अवश्य, ठीक, सचमुच, अलबत्ता, वास्तव में, बेशक, निःसंदेह आदि।

अनिश्चयात्मक- कदाचित्, शायद, सम्भव है, बहुत करके, प्रायः अक्सर आदि।

स्वीकारात्मक- हाँ, ठीक, सच, बिलकुल, सही, बिलकुल सही, जी हाँ, आदि।

कारणात्मक (हेतु)- इसलिए, अतएव, क्यों किसलिए, काहे को, अतः आदि कारणात्मक या हेतु क्रिया-विशेषण हैं।

निषेधात्मक- न, ना, नहीं, मत, बिलकुल नहीं, हरगिज नहीं, जी नहीं आदि।

आवृत्यात्मक- गटागट, फटाफट, खुल्लमखुल्ला आदि।

अवधारक - ही, तो, भी, तक, भर, मात्र, अभी, कभी, जभी, तभी, आदि।

क्रिया विशेषणों की रचना

मूल क्रिया विशेषणों के अतिरिक्त प्रत्यय, समास आदि के योग से भी कुछ क्रिया-विशेषण शब्दों की रचना होती है। जिन्हें यौगिक क्रिया-विशेषण कहा जाता है। ये निम्न प्रकार हैं-

संज्ञा से- प्रेमपूर्वक, कुशलतापूर्वक, दिन-भर, रात तक, सवेरे, सायं, आदि संज्ञा शब्दों के योग से बने हैं।

सर्वनाम से- यहाँ, वहाँ, अब, जब, जिससे, इसलिए, जिस पर, ज्यों, त्यों, जैसे-वैसे, जहाँ-वहाँ आदि।

विशेषण से- धीरे, चुपके, इतने में, ऐसे, वैसे, कैसे, जैसे, पहले, दूसरे प्रायः बहुधा आदि।

क्रिया से- चलते-चलते, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते, करते हुए, लौटते हुए, जाते-जाते आदि।

शब्दों की पुनरुक्ति से- हाथों-हाथ, बीचों-बीच, घर-घर, साफ-साफ, कभी-कभी, क्षण-क्षण, पल-पल, धड़ाधड़ आदि।

विलोमशब्दों के योग से रात-दिन, साँझ-सवेरे, देश-विदेश, उल्टा-सीधा, छोटा-बडा, आदि।

तः प्रत्याना- सामान्यतः, वस्तुतः, साधारणतः, येन केन, प्रकारेण (जैसे-तैसे) आदि।

बिना प्रत्ययान्त के- कभी-कभी, संज्ञा, सर्वनाम विशेषण आदि के बिना किसी प्रत्यय के, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं- जैसे-

संज्ञा (1) तू सिर पड़ेगा।

(2) तुम खाक करोगे।

सर्वनाम (1) यह क्या हुआ।

(2)तूने यह क्या किया।

विशेषण (1) अच्छा हुआ।

(2) घोड़ा अच्छा चलता है।

पूर्व कालिक क्रिया- सुनकर चला गया। आदि वाक्य । क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

परसर्ग जोड़कर- कुछ क्रिया-विशेषणों के साथ को से, के, की, पर आदि विभक्तियाँ भी लगती हैं और इनके योग से भी क्रिया-विशेषणों की रचना होती है।

जैसे- 1. कहाँ से आ रहे हो?

2. यहाँ से क्यों जा रहे हो?

3. कब से तुम्हारी राह देख रहा हूँ।

4. गुरु जी से नम्रता से बोले।

5. आगे से ऐसा मत करना।

6. रात को देर तक मत पढ़ना।

आदि परसर्गों की सहायता से बने हुए वाक्य क्रिया-विशेषण का कार्य कर रहे हैं।

पदबन्ध- पूरे वाक्यांश क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- 1. सवेरे से शाम तक।

2. धन-मन-धन से।

3. जी-जान से।

4. पहाड़ की तलहटी में।

5. आपके आदेशानुसार। आदि पदबन्ध क्रिया-विशेषण हैं।

2. **समुच्चय बोधक (योजक)**

परिभाषा- जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों, पदबन्धों या वाक्यों को मिलाते हैं वे समुच्चय बोधक या योजक अव्यय कहलाते हैं।

जैसे-

1.वह निकम्मा है इसीलिए सब उसे दुत्कारत हैं

2. यदि तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य उत्तीर्ण होंगे।

3. राम यहाँ रहे या कहीं और।

4. यह मेरा घर है और यह मेरे मित्र का।

उक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द समुच्चय या योजक अव्यय हैं क्यों कि ये वाक्यों को आपस में जोड़ रहे हैं।

समुच्चय बोधक अव्यय के दो भेद हैं-

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक

2. व्याधिकरण समुच्चय बोधक

1. समानाधिकरण समुच्चय बोधक

वे अव्यय जो समान घटकों (शब्दों, वाक्यों, या वाक्यांशों) को परस्पर मिलाते हैं, समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

समानाधिकरण अव्यय के चार भेद हैं-

(i) संयोजक
(ii) विकल्प बोधक
(iii) भेदबोधक

संयोजक- जो वाक्य शब्द वाक्यों, वाक्यांशों या शब्दों में संयोग प्रकट करते हैं उन्हें संयोजक कहते हैं यथा-

1. राम और श्याम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते हैं।

2. मैं और मेरा पुत्र एवं पड़ोसी सभी साथ थे।

3. बादल उमड़े एवं वर्षा हुई।

रेखांकित शब्द यहाँ संयोजक अव्यय हैं।

विकल्प बोधक- ये अव्यय शब्दों, वाक्यांशों, अथवा वाक्यों में विकल्प प्रकट करते हुए अथवा विभाजन करते हुए उनमें मेल कराते हैं- जैसे-

1. तुम चलोगे अथवा श्याम चलेगा।

2. न रमेश कोई काम करता है न सुरेश ही।

3. तुम्हें जन्मदिन पर घड़ी मिलेगी या साइकिल।

उक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द विकल्प बोधक अव्यय का कार्य कर रहे हैं।

सदृश	वह खुशी के मारे कमल के सदृश खिल उठा।
विरुद्ध	मेरे विरुद्ध वह आवाज नहीं उठा सकता.
बाहर	घर के बाहर बहुत बड़ा चौक है।

(चौदह) भेदों (प्रकार) में इस प्रकार स्पष्ट करेंगे।

1. कालवाचक- आगे, पूर्व, पहले, बाद, पीछे, पश्चात्, उपरान्त आदि।
2. स्थानवाचक- ऊपर, नीचे तले, मध्य, बाहर ही, भीतर, अन्दर, सामने, पास, निकट, यहाँ वहाँ, नजदीक आदि।
3. दिशावाचक- सामने, ओर, पार, तरफ, आर-पार, प्रति, आस-पास आदि।
4. साधन वाचक- विरुद्ध, जरिये, निमित्र, हाथ, मारफत, सहारे आदि।
5. विरोधसूचक- प्रतिकूल, उलटे, विपरीत, खिलाफ आदि।
6. हेतुवाचक- कारण, हेतु, लिए, निमित्त, वास्ते, खातिर आदि।
7. व्यतिरेकवाचक- अतिरिक्त, अलावा, सहित, सिवाय आदि।
8. सहसूचक- साथ, संग, समेत, पूर्वक, अधीन, स्वाधीन, वश आदि।
9. पार्थक्य सूचक- दूर, पृथक, परे, हटकर, आदि।
10. तुलनावाचक- की अपेक्षा, वीनशयत, आदि।
11. संग्रहवाचक- मात्र, भर, पर्याप्त, तक आदि।
12. सदृश्यवाचक- सदृश, बराबर, ऐसा, जैसा, अनुसार, समान, तुल्य, नाई, अनुरूप, तरह आदि।
13. विनिमयवाचक- एवज, पलटे, के बदले, की जगह आदि।
14. विषयकवाचक- भरोसे, लेखे, नाम, विषय, बाबत आदि।

4. <u>विस्मयादि बोधकः-परिभाषा</u>- जिन शब्दों से बोलने वाले या लिखने वाले के विस्मय, हर्ष, शोक, लज्जा, ग्लानि आदि मनोभाव प्रकट होते हैं उन्हें विस्मयादिबोधक (द्योतक) अव्यय कहते हैं। इनके सात भेद हैं-

1. हर्षबोधक - वाह-वाह! धन्य-धन्य! आहा! शाबाश!
2. शोकबोधक- हाय! आह! हा-हा! त्राहि-त्राहि!
3. आश्चर्यबोधक- अहो! ओह!, ओहो,! हैं! क्या!
4. अनुमोदनबोधक- अच्छा!, हाँ-हाँ!, वाह ! शाबाश!
5. तिरस्कारबोधक- छिः!, हट!, अरे! धिक् !
6. स्वीकृतिबोधक- अच्छा!, ठीक!, बहुत अच्छा!, हाँ!, जी हाँ!

5. सम्बन्धबोधक- अरे!, रे! अजी!, अहो! आदि।

विशेष- कभी-कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्द भी विस्मयादिबोधक का काम करते हैं-जैसे- 1. संज्ञा- राम राम !, शिव-शिव! जय

1. गंगे!, श्री कृष्ण! आदि।
2. सर्वनाम- यही! कौन! क्या!, तूने आदि।
3. विशेषण- सुन्दर!, अच्छा!, खूब!, बहुत अच्छे ! जंगली! आदि।
4. क्रिया- चला जाऊँ!, चुप!, आ गये! आदि।
5. वाक्यांश- शान्तम् पापम्!

109. **कुटिल** – दुष्ट, घुंघराला, टेढ़ा।

110. **खग** – पक्षी, आकाश।

111. **गण** – छंद का अंग, समूह, भूत।

112. **गति** – दशा, चाल।

113. **मित्र** – साथी, सूर्य।

114. **रंग** – प्रेम, दशा, वर्ण

समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द

हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जिनका उच्चारण एक समान प्रतीत होता है, परंतु उनमें सूक्ष्म अंतर होता है और अर्थ बिल्कुल भिन्न होता है। जैसे – पुरुष, परुष इनका उच्चारण तो लगभग एक ही जैसा है, परंतु अर्थ (पुरुष – मर्द, परुष – अप्रिय) बिल्कुल भिन्न है। इसी तरह के कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं।

- अंश – भाग, हिस्सा
- अंस – कंधा
- अनल – आग
- अनिल – वायु
- अचल – पर्वत
- अचला – पृथ्वी
- अकार – 'अ' अक्षर
- आकार – रूप-रेखा
- अजात – न पैदा हुआ
- अज्ञात – न जाना हुआ
- अवधि – सीमा

अवधी – अवध की भाषा

अध्याय – 14

विलोम शब्द

"अ"

अकाल	सुकाल
अगम	सुगम
अग्र	पश्च
अग्र	अनुज
अ	अनघ
अघोष	सघोष
अतिथि	आतिथेय
अतल	वितल
अथ	इति
अर्थ	अनर्थ
अनन्त	अन्त
अनुग्रह	दण्ड,कोप
अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अनिवार्य	ऐच्छिक
अन्तरंग	बहिरंग
अनुकूल	प्रतिकूल
अनुराग	विराग
अनुरूप	प्रतिरूप
अनुलोम	प्रतिलोम
अधम	उत्तम
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अनुरक्त	विरक्त
अल्पप्राण	महाप्राण
असीम	ससीम
अपकार	उपकार
अनाहूत	आहूत
अनुयायी	विरोधी
अंगीकार	अस्वीकार
अंतरंग	बहिरंग

अंतर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अंधकार	प्रकाश \ आलोक
अकर्मक	सकर्मक
अकर्मण्य	कर्मण्य \ कर्मठ
अकाम	निष्काम , सकाम
अकेला	साथ
अगम	गम , सुगम
अग्रि	पश्च , पश्चात्
अघ (पाप)	अनघ (पवित्र)
अचर	चर
अचेत \ अचेतन	सचेत , चेतन
अज्ञ	विज्ञ \ प्रज्ञ \ सर्वज्ञ
अतल	वितल
अतिकाय (बड़ा शरीर)	कृशकाय \ लघुकाय
अतिथि	आतिथेय (मेजबान)
अतिवृष्टि	अनावृष्टि (अनावर्षण)
अधम	श्रेष्ठ , उत्तम
अधिकार	अनधिकार
अधिकृत	अनधिकृत
अधीर	धीर
अनंत	अंत
अनाहूत (बिना बुलाया)	आहूत
अनिवार्य	ऐच्छिक \ वैकल्पिक
अनुग्रह	दंड \ कोप
अनुरक्त	विरक्त
अनुराग	द्वेष , विराग
अनैक्य	ऐक्य (एकता)
अपकार	उपकार
अपचय (हानि)	उपचय (वृद्धि)
अपमान	सम्मान
अपयश	सुयश (यश)
अपराध	निरपराध

अपेक्षा	निरपराध
अपेक्षा	उपेक्षा
अभिज्ञ	अनभिज्ञ \ अज्ञ
अभिमुख = पराङ्मुख (अन्य की तरफ मुख रखने वाला)	
अभियुक्त	अभियोगी
अभिशाप	वरदान
अमर	मर्त्य
अमृत	विष
अरुचि	सुरुचि
अर्जन	वर्जन (त्याग)
अर्पण	ग्रहण
अर्वाचीन (नया)	प्राचीन (पुराना)
अल्प	अति, महा, बहु, प्रचुर, अधिक
अल्पायु	दीर्घायु \ चिरायु
अवकाश	अनवकाश , व्यस्तता
अवनत (नीचा)	उन्नत (ऊँचा)
अवनति (पतन)	उन्नति
अवनि	अंबर
अवर(छोटा)	प्रवर (बड़ा)
अवलम्ब	निरवलम्ब
अवश्य	संभवतः
अवसाद (दुः ख)	प्रफुल्लता
अस्तेय (चोरी न करना) = स्तेय (चोरी)	

"आ"

आग्रह	दुराग्रह
आड़म्बर	सादगी
आच्छादित	अनाच्छादित
आचार	अनाचार
आलोक	अन्धकार
आक्रमण	प्रतिरक्षा
आकाश	पाताल

दुर्जन	सज्जन
दुष्ट	भद्र, साधु, भला
दुर्बल	सबल
दुष्प्राय	सुप्राप्य
दैत्य/ दानव	देव
द्वन्द	निर्द्वंद
दरिद्र \ निर्धन	धनी \ सम्पन्न
दुराशय (बुरा सोच)	सदाशय
दुरुपयोग	सदुपयोग
दुर्दिन	सुदिन
दुर्दैय (दुर्भाग्य)	सौभाग्य
दुर्बुद्धि	सुबुद्धि
देवी	आसुरी

"ध"

धनी	निर्धन
धर्म	अधर्म
धवल	कृष्ण
ध्वंस	निर्माण
धनात्मक	ऋणात्मक
धनाढ्य	निर्धन
धीर	अधीर
धैर्य	अधैर्य
धूप	छाया
धृष्ट	विनीत
धूमिल	उज्वल

"न"

नकद	उधार
नख	शिख
नत	उन्नत
नमक हराम	नमक हलाल
नरक	स्वर्ग
नवीन	प्राचीन
नश्वर	शाश्वत
नागरिक	ग्रामीण
निष्काम	सकाम
निषिद्ध	विहित,उचित
निश्चल	चंचल
निष्फल	सफल
निर्लज्ज	सलज्ज
नीरस	सरस
निश्चय	अनिश्चय,
संदेह	असंदेह
नूतन	पुरातन
न्यून	अधिक
नैतिक	अनैतिक
नैसर्गिक	कृत्रिम
नायक	खलनायक
नास्तिक	आस्तिक
निंदा	स्तुति
नित्य	अनित्य
निमीलन (बंद होना)	= उन्मीलन (खुलना)
निरक्षर	साक्षर
निरर्थक	सार्थक
निराकार	साकार
निरामिष	सामिष
निर्मल	मलिन
निर्लज्ज	सलज्ज
निश्चल	चंचल
निषिद्ध	विहित (उचित)
निष्काम	सकाम
नेक (अच्छा)	बद (बुरा)
नैसर्गिक (प्राकृतिक)	कृत्रिम

"प"

पठित	अपठित
पतन	उत्थान
परा	अपरा
परुष	कोमल
परतंत्र	स्वतंत्र
परकीय	स्वकीय
पराधीन	स्वाधीन
पश्चात	पूर्व
पवित्र	अपवित्र
पतिव्रता	कुलटा
परितोष	दंड़
पदोन्नत	पदावनत
पार	अपार
पालक	घातक,संहारक
पाठ्य	अपाठ्य
पात्र	अपात्र, कुपात्र
पावन	अपावन
पाप	पुण्य
प्रवेश	निर्गम
प्रजातंत्र	राजतन्त्र
प्रतीची	प्राची
प्रमुख	सामान्य
प्रशंसा	निंदा
प्रसन्न	अप्रसन्न
प्रसारण	संकुचन
प्रसाद	विषाद
प्रश्न	उत्तर
प्रातः	सांय
प्राचीन	अर्वाचीन
प्राची	प्रतीची
प्राकृतिक	अप्राकृतिक
प्रेम	घृणा
पंडित	मुर्ख
पतित	पुण्यात्मा
पदारूढ़	पदच्युत
परवर्ती (बादवाला) =	पूर्ववर्ती (पहलेवाला)
परिहार्य	अपरिहार्य (अनिवार्य)
पाशविक	मानवी
पुष्ट	क्षीण , अपुष्ट
प्रकृति	पुरुष
प्रगति (उन्नति)	अवनति
प्रच्छन्न (छिपा हुआ)=	प्रकट
प्रदोष (शाम)	प्रत्यूष (सुबह)
प्रधान	गौण
प्रभु (स्वामी)	भृत्य (सेवक)
प्रलय	सृष्टि
प्रवृति	निवृति
प्रवेश	निर्गम
प्राणपद (प्राण प्रदान करने वाला) =	प्राणहर
प्रारब्ध (पिछले जन्म के कर्म) =	पौरुष (इस जन्म के कर्म)

"फ"

फल	निष्फल
फूल	कांटा
फैलना	सिकुड़ना

"ब"

बद्ध	मुक्त
बद	नेक
बर्बर	सभ्य
बहादुर	ड़रपोक, कायर
बहिरंग	अन्तरंग
बंजर	उर्वर
बाढ़	सूखा
बच्चा	बुढा

स्वेद –	पसीना
शर –	बाण
सर –	तालाब
शर्व –	शिव , विष्णु
सर्व –	सब
शम –	शांति
सम –	बराबर
शील –	चरित्र
सिल –	पत्थर (छोटी शिला)
श्व –	आने वाला कल
स्व –	अपना
षष्टि –	60 वर्ष
षष्ठी –	छठी
सुत –	पुत्र
सूत –	धागा , भाट
सबल –	शक्तिशाली
शबल –	रंग – बिरंगा
सुधि –	याद
सुधी –	बुद्धिमान
सर्वदा –	हमेशा
सर्वथा –	सब तरह से
सुरभि –	गंध
सुरभी –	गाय
स्तन –	उरोज
स्तन्य –	दूध

अध्याय – 19

वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द

अच्छी रचना के लिए आवश्यक है कि कम से कम शब्दों में विचार प्रकट किए जाए। और भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर विचार अभिव्यक्त कर सके। कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वाक्यांश या शब्द-समूह के लिए एक शब्द' का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य-रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता तथा गंभीरता आ जाती है। भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते हैं ।

कुछ वाक्यांशों के लिए एक शब्द –

'अ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो सबसे आगे रहता हो - अग्रणी
- किसी आदरणीय का स्वागत करने के लिए चलकर कुछ आगे पहुँचना - अगवानी
- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके - अगाध
- जो गाये जाने योग्य न हो - अगेय
- जो छेदा न जा सके - अछेद्य
- जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो - अजातशत्रु
- जिसे जीता न जा सके – अजेय
- जिसके खंड या टुकड़े न किये गये हों - अखंडित
- जो खाने योग्य न हो - अखाद्य
- जो गिना ना जा सके - अगणित/अनगिनत
- जिसके अंदर या पास न पहुँचा जा सके - अगम्य
- जिसके पास कुछ भी न हो - अकिंचन
- जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो - अक्षम
- जिसका खंडन न किया जा सके - अखंडनीय
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो - अगोचर

- दूर तक फैलने वाला अत्यधिक नाशक आग - अग्निकांड
- जिसका जन्म पहले हुआ हो - अग्रज
- जो किसी देन या पारिश्रमिक मद्दे पहले से ही सोचे - अग्रिम
- जो अंडे से जन्म लेता है - अंडज
- किसी कथा के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा - अंतक़था
- राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास स्थान - अंतपुर
- मन में आप से उत्पन्न होने वाली प्रेरणा - अंतप्रेरणा
- अंक में सोने वाला - अंकशायी
- अंक में स्थान पाया हुआ – अंकस्थ
- मूलकथा में आने वाला प्रसंग , लघु कथा - **अंतःकथा**
- महल का वह भाग जहाँ रानियाँ निवास करती है – **अंतःपुर**
- धरती और स्वर्ग (आकाश) के बीच का स्थान - **अंतरिक्ष**
- मन में होने वाला स्वाभाविक ज्ञान - **अंतर्ज्ञान**
- जो सबके मन की बात जनता हो - **अंतर्यामी**
- वह विद्यार्थी जो आचार्य के पास ही निवास करता हो - **अंतेवासी**
- जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ है - **अंत्यज**
- अपने हिस्से या अंश के रूप में कुछ देना - **अंशदान**
- जिसको कहा न जा सके - **अकथनीय**
- जिसको काटा न जा सके **अकाट्य**
- जिसके पास कुछ भी नहीं हो - **अकिंचन**
- जो पासे के खेल में कुशल हो - **अक्षधूर्त**
- जो क्षमा न किया जा सके - **अक्षम्य**
- जिसका खंडन ने किया जा सके - **अखंड / अखंडनीय**
- जो खाने योग्य न हो - **अखाद्य्य**
- जहाँ पहुँचा न जा सके - **अगम्य**
- जिसकी निंदा न की गई हो - **अगर्हित**
- जो बहुत घर हो - **अगाध**
- जो इंद्रियों (गो)द्वारा न जाना जा सके - **अगोचर**
- जो पहले जन्मा हो (बड़ा भाई) - **अग्रज**
- आगे का विचार करने वाला - **अग्रसोची**
- जिस पर चिंतन न किया गया हो - **अचिंतित**
- जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके - **अच्युत**
- प्रसूता (संतान को जन्म देनेवाली) को दिया जाने वाला भोजन - **अछवानी**
- जिसका जन्म न हो - **अज / अजन्मा**
- जो कभी बूढ़ा न हो - **अजर**
- जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - **अजातशत्रु**
- जिसको जीता न जा सके - **अजेय**
- जो कुछ नहीं जानता हो - **अज्ञ / अज्ञानी**
- जिसका पता न हो - **अज्ञात**
- जिसे जाना न जा सके - **अज्ञेय**
- जो अपनी बात से टले नहीं - **अटल**
- न टूटने वाला - **अटूट**
- जो अपनी जगह से न डिगे - **अडिग**
- अंड से जन्म लेने वाला - **अंडज**
- किसी बात पर व्यर्थ प्रलाप करना - **अतिकथा**
- मर्यादा का उल्लंघन करके किया हुआ - **अतिकृत**
- जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो - **अतिथि**
- आवश्यकता से अधिक बरसात - **अतिवृष्टि**
- किसी बात को अत्यधिक बढ़ाकर कहना - **अतिश्योक्ति**
- जिसका ज्ञान इंद्रियों के द्वारा न हो - **अतीद्रिय**
- जो व्यतीत हो गया हो - **अतीत**
- जो ऊँचा न हो - **अतुंग**
- शीघ्रता का अभाव - **अत्वरा**
- जिसकी गहराई का पता न लग सके - **अथाह**
- जिसका दमन न किया जा सके - **अदम्य**
- जिसे देखा न जा सके - **अदृश्य**
- जो पहले न देखा गया हो - **अदृष्टपूर्व**
- जो आज तक से संबंध रखता है - **अदयतन**
- जिसके बराबर दूसरा न हो - **अद्वितीय**
- जो ऋण लेता है (कर्जदार) - **अधमर्ण**

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/f3uxse

Online order - https://bit.ly/3MicWlh

Call करें - 9887809083